



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (i)
PART II—Section 3—Sub-section (i)

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY



सं. 389]
No. 389]

नई दिल्ली, सोमवार, जुलाई 27, 1987/श्रावण 5, 1909
NEW DELHI, MONDAY, JULY 27, 1987/SRAVANA 5, 1909

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में
रखा जा सके

Separate Paging is given to this Part in order that it may be filed as a
separate compilation

संचार मंत्रालय

(दूर संचार विभाग)

(दूर संचार बोर्ड)

नई दिल्ली, 27 जुलाई, 1987

अधिसूचना

सा.का.नि. 674 (अ).—केन्द्रीय सरकार, भारतीय तार अधिनियम, 1885 (1885 का 13) की धारा 7 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, भारतीय तार नियम, 1951 का और संशोधन करने के लिए निम्नलिखित नियम बनाती है, अर्थात् :

1. (1) इन नियमों का संश्लेषण नाम भारतीय तार (नियम संशोधन) नियम 1987 है।

(2) ये राजपत्र में प्रकाशन की तारीख को प्रदत्त होंगे।

2. भारतीय तार नियम, 1951 में (जिन्हें इसमें इसके पश्चात उक्त नियम कहा गया है), नियम 446 को उसके उपनियम (1) के रूप में पुनः संख्यांकित किया जाएगा और इस प्रकार पुनः संख्यांकित उपनियम (1) के पश्चात् निम्नलिखित उपनियम अंतः स्थापित किया जाएगा, अर्थात् :—

(2) “जब किसी अभिदाता को टेलीफोन लाइन या पी ए बी एक्स या पी बी एक्स की जंक्शन लाइन द्वारा संचार विभाग

द्वारा किए जाने वाले कार्यों के कारणों से, निरंतर पंद्रह दिन की या अधिक की अवधि के लिए विछिन्न रहती है, तब अभिदाता को, उक्त अवधि के लिए उपलब्ध निशुल्क कालों को कम करके, भाटक में आनुपातिक रिबेट या प्रतिदाय अनुज्ञात किया जाएगा।”

3. उक्त नियमों के नियम 474 के स्थान पर निम्नलिखित नियम रखा जाएगा, अर्थात् :—

“474 यद्यपि दूरसंचार विभाग, सर्किटों को (जिसमें स्थानीय लेड शामिल हैं) बाधारहित रखने का प्रयत्न प्रयास करेगा तो भी विभाग ऐसी किसी हानि, क्षति या अप्रतिष्ठा के लिए उत्तरदायी नहीं होगा जो प्रयोक्ता को वादाओं के परिणामस्वरूप हुई हो :

परन्तु, जब विभाग द्वारा किए जाने वाले कार्यों के कारणों से कोई पट्टाबद्ध सर्किट निरंतर पंद्रह दिन की या उन्ने अवधि की अवधि के लिए विछिन्न रहती है तब प्रयोक्ता को भाटक में आनुपातिक रिबेट या प्रतिदाय अनुज्ञात किया जाएगा। उक्त नियमों के नियम 51 में उपनियम (1) के स्थान पर निम्नलिखित उपनियम रखा जाएगा, अर्थात् :

(1) “जब विभाग द्वारा किए जाने वाले कार्यों के कारणों से किसी अभिदाता की टेलीफोन सेवा निरंतर पंद्रह दिन या

उससे अधिक की अवधि के लिए विहित रहेंगे तब अभिवृत्ति की आनुपातिक रिबेट या प्रतिदाय अनुमान किया जाएगा।”

[सं. 3-6/80-आर]

कै. एस. के. मूर्ति उप महानिदेशक (सी एस) और
प्रेस संयुक्त सचिव
भारत सरकार

टिप्पण : मूल नियम, डाकतार नियम 1 निवेशिका खिस्द I (विभा
अधिनियमित भाग II) के प्रकाशन के पश्चात्

1 सितम्बर, 1984 तक संशोधित किए गए हैं और उनका निम्न-
लिखित द्वारा संशोधन किया गया है, अर्थात् :

- (1) सा.का.नि. सं. 387 (अ) तारीख 22-5-84
- (2) सा.का.नि. सं. 679 तारीख 27-4-84
- (3) सा.का.नि. सं. 428 तारीख 27-4-85
- (4) सा.का.नि. सं. 729 तारीख 3-8-85
- (5) सा.का.नि. सं. 482 तारीख 19-10-85
- (6) सा.का.नि. सं. 553 (अ) तारीख 27-3-86
- (7) सा.का.नि. सं. 314 तारीख 26-4-86
- (8) सा.का.नि. सं. 953 (अ) तारीख 22-7-86
- (9) सा.का.नि. सं. 1121 (अ) तारीख 1-10-86
- (10) सा.का.नि. सं. 1167 (अ) तारीख 28-10-86
- (11) सा.का.नि. सं. 1237 (अ) तारीख 28-11-86
- (12) सा.का.नि. सं. 112 (अ) तारीख 25-2-87

MINISTRY OF COMMUNICATIONS

(Department of Telecommunications)

(Telecommunications Board)

New Delhi, the 27th July, 1987

NOTIFICATION

G.S.R. 674(E).—In exercise of the power conferred by section 7 of the Indian Telegraph Act, 1885 (13 of 1885), the Central Government hereby makes the following rules further to amend the Indian Telegraph Rules, 1951, namely:—

1. (1) These rules may be called the Indian Telegraph (Third Amendment) Rules, 1987.

(2) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.

2. In the Indian Telegraph Rules, 1951 (hereinafter referred to as the said rules), rule 446 shall be re-numbered as sub-rule (1) thereof and after sub-rule (1) as so renumbered, the following sub-rule shall be inserted, namely:—

“(2) When the telephone line of a subscriber or junction lines to PABX or PBX remain interrupted continuously for a period of fifteen days or more due to reasons attributable to the Department of Telecommunications, a proportionate rebate or refund in rental, after reducing the free calls available for the said period, shall be allowed to the subscriber.”

3. For rule 474 of the said rules, the following rule shall be substituted, namely:—

“474. While the Department of Telecommunications shall make every endeavour to keep the circuits (including local leads) free from interruptions, the Department shall not be responsible for any loss, damage, or inconvenience caused to the user as a result of interruption:

Provided that when a leased circuit remains interrupted continuously for a period of fifteen days or more due to reasons attributable to the Department, a proportionate rebate or refund in rental shall be allowed to the user.”

4. In rule 519-A of the said rules, for sub-rule (1), the following sub-rule shall be substituted, namely:—

“(1) When the telex service of a subscriber remains interrupted continuously for a period of fifteen days or more due to reasons attributable to the Department, a proportionate rebate or refund shall be allowed to the subscriber.”

[No. 3-6/80-R]

K. S. K. MOORTHY, Dy. Director Genl. (CS) and
Ex.Officio Jt. Secy.
to the Government of India

NOTE.—The principal rules after publication of P&T Manual Volume I (Legislative Enactment—Part II) corrected upto 1st September, 1984 amending the said rules have been issued, namely:—

- (1) G.S.R. No. 387(E) dated 22-5-84.
- (2) G.S.R. No. 679 dated 27-4-84.
- (3) G.S.R. No. 428 dated 27-4-85.
- (4) G.S.R. No. 729 dated 3-8-85
- (5) G.S.R. No. 482 dated 19-10-85
- (6) G.S.R. No. 553(E) dated 27-3-86
- (7) G.S.R. No. 314 dated 26-4-86
- (8) G.S.R. No. 953(E) dated 22-7-86
- (9) G.S.R. No. 1121(E) dated 1-10-86
- (10) G.S.R. No. 1167(E) dated 28-10-86
- (11) G.S.R. No. 1237(E) dated 28-11-86
- (12) G.S.R. No. 112(E) dated 25-2-87.